

॥ श्रीहरिः ॥

“वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्
देवकीपरमानन्दं कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम्”

नित्य पठनीय पाँच श्लोक

(श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 4 के श्लोक 6 से 10 तक)

अजोऽपि सन्-नव्ययात्मा, भूताना-मीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वा-मधिष्ठाय, सम्भवा-म्यात्म-मायया ॥6॥

मैं अजन्मा और अविनाशी-स्वरूप होते हुए भी तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृतिको अधीन करके अपनी योगमायासे प्रकट होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्-भवति भारत।

अभ्युत्थान-मधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥

हे भरतवंशी अर्जुन! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने-आपको (साकार रूपसे) प्रकट करता हूँ।

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म-संस्थाप-नार्थाय, सम्भवामि युगे युगे ॥8॥

साधुओं (भक्तों)-की रक्षा करनेके लिये, पापकर्म करनेवालोंका विनाश करनेके लिए और धर्मकी भली-भाँति स्थापना करनेके लिये मैं युग-युगमें प्रकट हुआ करता हूँ।

जन्म कर्मजन्म कर्म च मे दिव्य, -मेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।

त्यक्ता देहं पुनर्जन्म, नैति मामेति सोऽर्जुन ॥9॥

हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। इस प्रकार (मेरे जन्म और कर्मको) जो मनुष्य तत्त्वसे जान लेता है अर्थात् दृढ़तापूर्वक मान लेता है, वह शरीरका त्याग करके पुनर्जन्मको प्राप्त नहीं होता, प्रत्युत मुझे प्राप्त होता है।

वीतराग-भय-क्रोधा, मन्मया मामुपाश्रिताः।

बहवो ज्ञान-तपसा, पूता मद्-भाव-मागताः ॥10॥

राग, भय और क्रोधसे सर्वथा रहित, मुझमें तल्लीन, मेरे ही आश्रित तथा ज्ञानरूप तपसे पवित्र हुए बहुत-से भक्त मेरे स्वरूपको प्राप्त हो चुके हैं।

हे नाथ ! हे मेरे नाथ ! मैं आपको भूलूँ नहीं !